जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

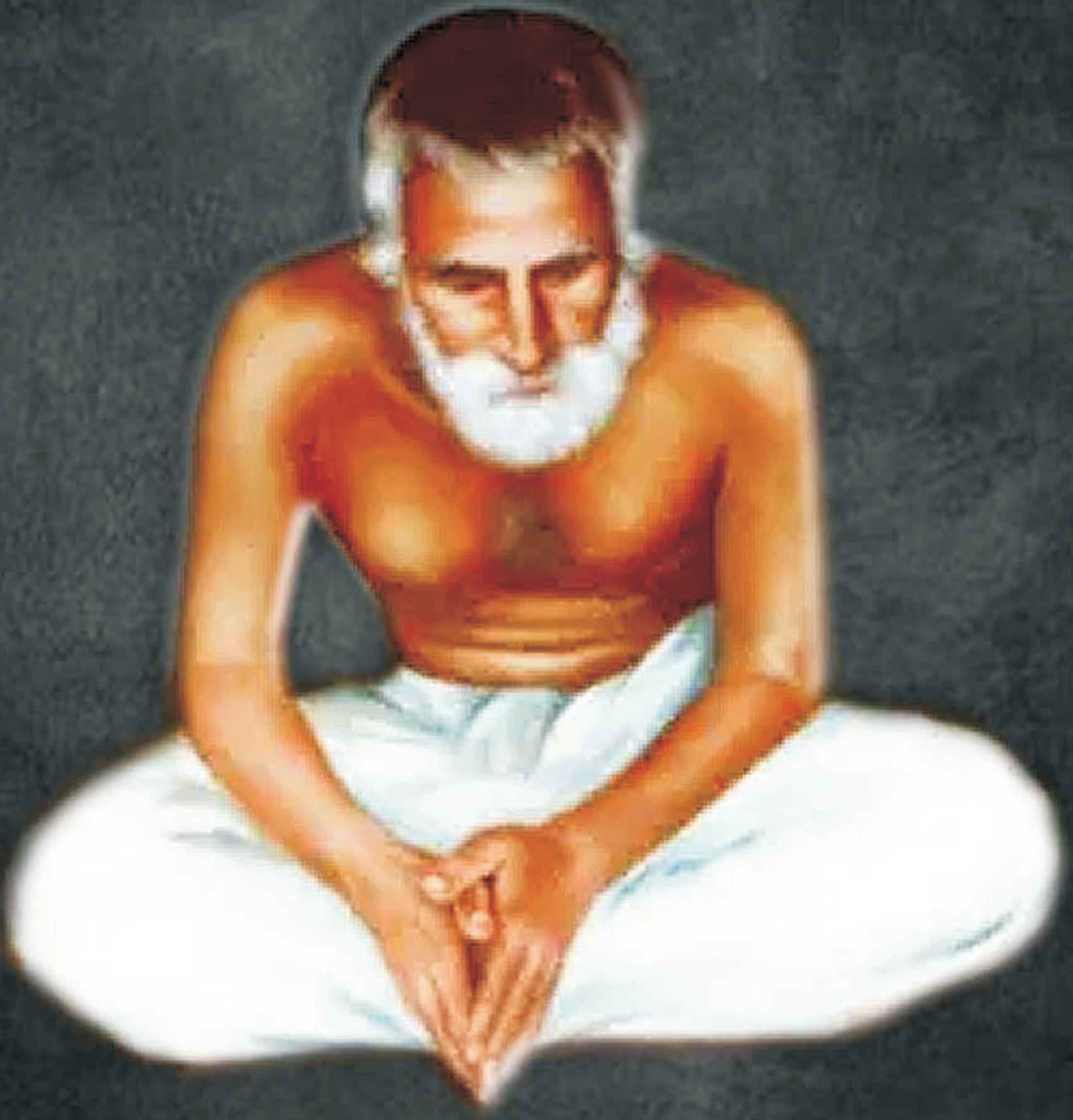

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

बाबाजी महाराज
जी का आर्शीवाद

एक समय विषयी लोगों से तंग आकर बाबाजी महाराज कुलिया नगर {वर्तमान नवद्वीप शहर} की एक सार्वजनिक धर्मशाला के शौचालय में भीतर से दरवाजा बंद कर भजन करने लगे। लोगों को यह पता नहीं चल सका कि बाबाजी कहाँ चले गये। इन्होंने पारखाने की दुर्गंध को विषयी लोगों के

दुःसंग से उत्तम समझा, इसीलिए दुर्गंधमय स्थान में रहकर भजन करना ही श्रेयस्कर माना। दो–तीन दिनों के पश्चात् मेहतरानी टट्टी साफ करने के लिए पाखाने के नीचे आई, तो उसने 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।' की विरहकातर करुण ध्वनि सुनी। उसने ऊपर की ओर झाँककर देखा, श्रील बाबाजी महाराज भावविभोर होकर हरिनाम कर रहे थे। उन्हें तन–

मन और दुर्गंध आदि की सुध-बुध नहीं थी। ऐसा देखकर वह चकित रह गई। उसने तुरन्त नगर पालिकाध्यक्ष को इसकी सूचना दी। थोड़ी ही देर में यह संवाद जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक आदि के कानों तक पहुँचा। इन सभी लोगों ने श्रील बाबाजी महाराज के निकट आकर उन्हें पाखाने का दरवाजा खोलकर बाहर आने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने कहा– "बाबाजी महाराज! हम लोगों ने भगवती

गंगा के किनारे आपके लिए भजनकुटी की व्यवस्था की है। आप वहाँ रहकर भजन करें।” किन्तु बाबाजी महाराज ने उनकी बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया और अविश्रान्त हरिनाम करते रहे। उन उच्चपदस्थ अधिकारियों द्वारा पुनः पुनः आग्रह करने पर श्रील बाबाजी महाराज ने अत्यन्त क्षीण स्वर से केवल इतना ही कहा– “मैं अस्वस्थ हूँ। मैं दरवाजा नहीं खोल सकता।” उक्त अधिकारीगण हारकर

अन्त में चले गये।

इसी समय थोड़ी देर के बाद श्रील प्रभुपाद के निर्देश से उनकी प्रथम शिष्याएँ– सरोजिनी देवी और प्रियतमा देवी तथा श्रीगौरगोविन्द विद्याभूषण के साथ श्रीविनोदविहारी ब्रह्मचारी {संन्यास के बाद त्रिदण्डिस्वामी श्रीश्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज} मायापुर से श्रील बाबाजी महाराज के दर्शन के लिए उपस्थित हुए। किन्तु

बार बार अनुरोध करने पर भी श्रील बाबाजी महाराज कपाट खोलने को तैयार नहीं हुए, बहाना बनाते रहे। ऐसा देखकर श्रीगौरगोविन्द प्रभु ने बड़े ही विनीत स्वर से कहा– "बाबाजी महाराज! हम लोग श्रील सरस्वती ठाकुर के अनुगृहीत शिष्य हैं। उनहीं के निर्देश से बड़ी आशा लेकर आपके दर्शन के लिए आये हैं। आपका दर्शन नहीं पाने से हम बड़े मर्माहत होंगे।" इतना सुनते ही बाबाजी

महाराज बड़े प्रसन्न हुए और अत्यन्त स्नेहपूर्वक कहा– “आओ, तुम लोग सरस्वती ठाकुर के स्नेहपात्र हो” और जल्दी से दरवाजा खोल दिया। उस समय वे कपड़े की गाँठ द्वारा बनी हरिनाम की माला पर तन्मयतापूर्वक हरिनाम कर रहे थे। तभी श्रीविनोद बिहारी ब्रह्मचारी का परम सौम्य किशोर रूप, भजन करने की निष्कपट लालसा, युक्तवैराग्य का अंकुर तथा सर्वोपरि गुरुनिष्ठा लक्ष्य

कर आशीर्वाद देते हुए कहा– "मैंने तुम्हारे जीवन की सारी विपत्तियों और विघ्न-बाधाओं को ग्रहण किया। तुम निर्भीक होकर भजन करो तथा विश्व में सर्वत्र श्रीमन्महाप्रभु की वाणी का प्रचार करो।" ऐसा आशीर्वाद सुनकर श्रीविनोदबिहारी की आँखें छलछला आईं। वे सजल नेत्रों से उनके चरणों में गिर पड़े और उनकी चरणधूलि अपने मस्तक पर धारण की। कुछ देर बार

हरिकथा श्रवण करके वे सब बाबाजी महाराज की चरण वन्दना कर श्रीमायापुर के लिए विदा हुए।

श्रीलगुरुदेव